**International Journal of Advanced Education and Research**
**ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34**
**Received: 20-01-2019; Accepted: 24-02-2019**
**www.alleducationjournal.com**
**Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 70-73**

# रीवा जिला में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**मोनिका सिंह[1], डॉ. शाहेदा सिद्दीकी[2]**
[1] शोध छात्रा समाजशास्त्र, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्राध्यापक समाजशास्त्र, शासकीय ठा. रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांश**
इस शोध पत्र के द्वारा रीवा जिला में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं से शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र के 67.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

**मूल शब्दः** रीवा जिला, महिला शिक्षा, विकास, सामाजिक सशक्तीकरण

## 1. प्रस्तावना
भारतीय इतिहास मे महिलाओं की स्थिति मे विभिन्न कालों में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रही है। वास्तव मे भारतीय नारी की स्थिति का इतिहास क्रिया और प्रतिक्रिया का इतिहास है। अर्वाचीन भारत से लेकर स्वतंत्र भारत तक स्त्री की स्थिति मे रोमांचकारी परिर्वतन होते रहे है। आज स्त्री की जो स्थिति देखने को मिल रही है वह भिन्न–भिन्न चरणों से होकर गुजरती है।
19 वीं सदी के प्रारम्भ से स्त्री की गिरती हुई स्थिति ने फिर पलटा खाया स्त्री ने अपने अधिकारों को समझा शिक्षा के क्षेत्र मे राजनैतिक क्षेत्र मे तथा आन्दोलन मे भाग लेना शुरू कर दिया। इस शताब्दी मे भारतीय स्त्री पर ब्रिटिश स्त्री की स्थिति की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। यद्यपि यह परिवर्तन धीरे–धीरे हो रहा था परन्तु स्त्री अपने अधिकारों के बारे मे सजग होती जा रही थी। 21 वी शताब्दी ने तो स्त्री की स्थिति मे क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिए है। स्वतंत्रता के बाद तो इस दिशा मे और भी तीव्रता आयी है। आज भारत मे स्त्री सभी क्षेत्रों मे पुरूषो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक क्षेत्र मे वह पुरूषो से होड़ लगा रही है उनके बनाये हुए कानूनों व नियमों के प्रति खुले विरोध का वातावरण उत्पन्न कर रही है। आज भारतीय स्त्रियां पुरूषो की दासी मात्र नही रह गयी है। उनका कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी तक सीमित नही रह गया वरन् उन्हे पुरूषो की भॉति जीवन के सभी क्षेत्रो मे समान अधिकार व सुविधाएं उपलब्ध है। वास्तव मे आधुनिक भारतीय नारी की स्थिति को भली प्रकार समझने के लिये पारिवारिक धार्मिक और सामाजिक स्थितियो को अलग–अलग रूप मे देखा जा सकता है। स्वतंत्रत भारत मे अब ये महिलाएँ घर की चार दीवारी से निकलकर उन धन्धो मे आ रही है जिन पर अब तक पुरूषों का अधिपत्य था।
आज की परिस्थिति मे प्रत्येक परिवार कन्याओं को कुछ ना कुछ शिक्षा देना आवश्यक समझने लगा। अब प्रत्येक नगर व कस्बे मे स्त्रियों के लिये विद्यालय खुल गए है। व्यावसायिक व औद्योगिक संस्थाएं भी खोली गई है। निःशुल्क शिक्षा अन्य शुल्को मे रियायत, परीक्षाओं मे प्राइवेट बैठने की सुविधा, छात्रवृत्तियों आदि की व्यवस्था भी उपलब्ध है और वे पुरूषों के समान उच्च शिक्षा भी ग्रहण करने लगी है।
सामाजिक सशक्तीकरण का अभिप्राय होता है समाज प्रदत्त सभी असमानताओं, विषमताओं तथा अन्य समस्याओं को दूर करना और बुनियादी न्यूनतम सेवा के प्रति सुगम पहुंच निश्चित करना। महिला को किसी भी 'परिवार की धुरी' कहा जाता है। महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है कि महिलाएँ स्वयं ही अपने व परिवार के बारे में निर्णय लें, अपने फैसले को अमल में लाए और उन्हें सामाजिक स्वीकृति भी मिले लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो पा रहा है। जरूरत इस बात की है सामाजिक मान्यताओं, अवधारणाओं और क्रियात्मक को शक्ति के साथ जोड़कर देखा जाए। महिलाओं में कुशलता और काबिलियत की कोई कमी नहीं है, लेकिन पुरुष उन्हें मान्यता ही नहीं देना चाहते। पुरुष और महिलाओं की सामाजिक स्थिति में अंतर के कारण हमारी पुरातन धार्मिक व सामाजिक मान्यताओं में ही छिपे हैं। भारतीय परम्परा में जैविक व लैंगिक अंतर का आधार पर स्त्री–पुरुष में अंतर किया गया है और यहीं अंतर जीवन के लगभग सभी पक्षों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यही कारण है कि हमारे समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग जो महिलाओं का है निश्चित रूप से सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इनकी स्थिति को देखते हुए इनके विकास के विशेष कदम उठाए जाने की आवश्यकता है।

## 2. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य शासन द्वारा कठिनाइयों को दूर कर विकसित करने पर समर्थ हो सकता है। शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभाव सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा। जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में महिला शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो षिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

### 3. शोध की परिकल्पनायें :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

### 4. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया हैः–

- शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
- शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास में आने वाली समस्याओं व अवरोधों का पता लगाना।

### 5. शोध समस्या का सीमांकन

**5.1 भौगोलिक परिसीमनः** प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र रीवा जिला है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुलियान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं।

**5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः** अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, जिला अन्तर्गत महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव को इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

### 6. शोध विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

**6.1 साक्षात्कार विधिः** शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए इस क्षेत्र में ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों के महिलाओं से वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

**6.2 सांख्यिकी विधिः** प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

### 7. न्यादर्श चयन

महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

### 8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप उनके सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – चौधरी कल्पना (2009)[1], देवपुरा प्रतापमल (2005)[2], धर प्रांजल (2007)[3], गौरी डॉ कृष्ण चंद्र (2013)[4] एवं सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002)[5]।

### 9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है।

इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेष का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार $24.18^0$ उत्तरी अक्षांश से $25^0$ उत्तरी अक्षांश तथा $81.2^0$ पूर्वी देक्षांश से $82.18^0$ पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

### 10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

**सारणी 1:** शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

| क्र. | विकासखण्डों के नाम | उत्तरदाताओं की संख्या | महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | पड़ा है | | नही पड़ा है | | नही पता | |
| | | | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत |
| 1. | रीवा | 100 | 81 | 81.00 | 13 | 13.00 | 06 | 06.00 |
| 2. | रायपुर–कर्चुलियान | 100 | 71 | 71.00 | 16 | 16.00 | 13 | 13.00 |
| 3. | गंगेव | 100 | 68 | 68.00 | 18 | 18.00 | 14 | 14.00 |
| 4. | सिरमौर | 100 | 65 | 65.00 | 20 | 20.00 | 15 | 15.00 |
| 5. | मऊगंज | 100 | 70 | 70.00 | 14 | 14.00 | 16 | 16.00 |
| 6. | नईगढ़ी | 100 | 56 | 56.00 | 24 | 24.00 | 20 | 20.00 |
| 7. | हनुमना | 100 | 61 | 61.00 | 22 | 22.00 | 17 | 17.00 |
| 8. | त्योंथर | 100 | 74 | 74.00 | 15 | 15.00 | 11 | 11.00 |
| 9. | जवा | 100 | 60 | 60.00 | 18 | 18.00 | 22 | 22.00 |
| योग | | 900 | 606 | 67.33 | 160 | 17.78 | 134 | 14.89 |

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से चयनित ग्राम पंचायत, नगर/ कस्वों से 5–5 महिलाएँ कुल 900 महिलाओं से शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव की स्थिति से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 के आँकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र में न्यादर्श में चयनित कुल 900 उत्तरदाताओं में से 606 ने यह माना हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है तथा 160 ने यह माना है, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ रहा है, जबकि 134 को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

इस प्रकार यह अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 67.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 17.78 प्रतिशत यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 14.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

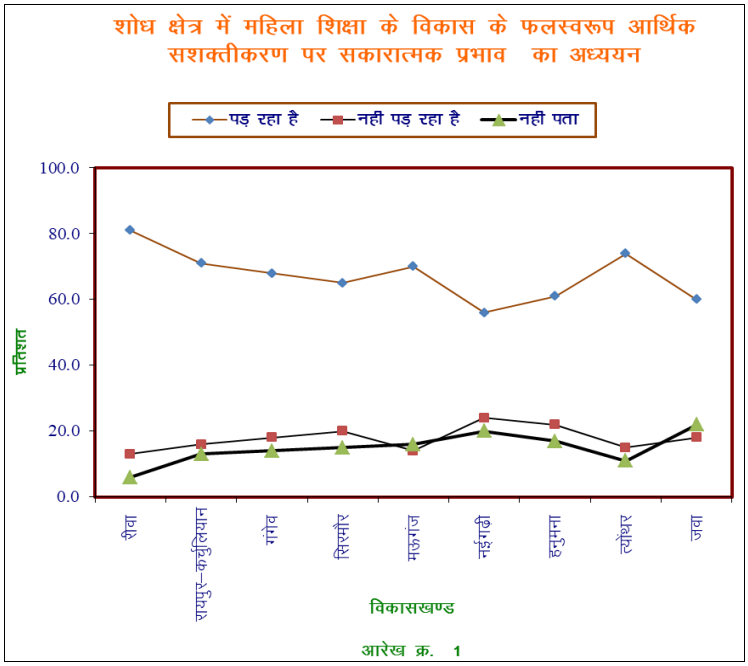


**सारणी 2:** शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

| समूह | | ग्रामीण क्षेत्र में महिला शिक्षा विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति | शहरी क्षेत्र में महिला शिक्षा विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति |
|---|---|---|---|
| समूह की संख्या ;N) | | 450 | 450 |
| मध्यमान (M) | | 28.02 | 29.67 |
| मानक विचलन (SD) | | 9.22 | 7.85 |
| क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.) | | –2.71 | |
| निष्कर्ष | 0.05 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नही है | |
| | 0.01 सार्थकता स्तर पर | सार्थक अन्तर नही है | |

df = (450-1) + (450-1) = 449+449 =898

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.02 है तथा मानक विचलन 9.15 है। शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 29.67 है तथा मानक विचलन 9.02 है।

898 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.71 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः अतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

## निष्कर्ष

### अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है

- शोध क्षेत्र के 67.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं के मतानुसार महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। 17.78 प्रतिशत यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है, जबकि 14.89 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इसके सम्बंध में कोई जानकारी नहीं है।

- ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.02 है तथा मानक विचलन 9.15 है। शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव की स्थिति में सार्थकता का औसत उपलब्धि 29.67 है तथा मानक विचलन 9.02 है। 898 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.71 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः अतः ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में महिला शिक्षा के विकास के फलस्वरूप सामाजिक सशक्तीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

## संदर्भ


1. चौधरी कल्पना (2009), भारतीय महिलाएँ और वानिकी सहकारिता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्ली – 110002।
2. देवपुरा प्रतापमल, महिला सशक्तीकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, मार्च 2005, ए विग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
3. धर प्रांजल, महिला सशक्तिकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका मार्च 2007, ए विंग गेट नं. 5, निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
4. गौरी डॉ कृष्ण चंद्र, ग्रामीण महिला सशक्तीकरण, कुरूक्षेत्र मासिक पत्रिका, अगस्त 2013, प्रकाशक, 'ए' विंग गेट 5; निर्माण भवन ग्रामीण विकास मंत्रालय नई दिल्ली 110011।
5. सिन्हा लोकेश्वर प्रसान (2002) – महिला सशक्तीकरण और दलित महिला डॉ. आम्बेडकर सामाजिक विज्ञान।